International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

समकालीन हिन्दी कहानी का बदलता परिदृश्य

डा. सुमन पलासिया
सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग
मा.ला.व.राजकीय महाविद्यालय, भीलवाड़ा(राजस्थान)

शोध सार

कहानी लेखन के क्षेत्र में इक्कीसवीं सदी में युवा पीढ़ी का आगमन हुआ. बीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशक के कहानीकारों के प्रभाव से मुक्त होने की कोशिश में इन कहानीकारों ने कहानी के शिल्प और कथ्य में विभिन्न प्रयोग किये. भमंडलीकरण के बाद के आर्थिक दबावो से जूझती एक पूरी पीढ़ी की आवश्यकताओं और चिन्ताओं को कथाकारों की यह पीढ़ी अपने कथ्य में समेटने का कार्य करती है.इन कहानीकारों की कहानियों के शिल्प में नयापन है, कथ्य में विविधता है और समकालीन परिवेश को भी यह कहानियाँ प्रकट करने का कार्य करती है. यह कहानियाँ इक्कीसवीं सदी के भारतीय समाज में व्याप्त सभी विसंगतियों, अवमूल्यनो, नैतिक स्खलनों, अन्तर्विरोधों और विमर्शों को उजागर करती है.

बीज शब्द

युवा कहानी, इक्कीसवी सदी, हिन्दी कहानी,

मूल आलेख

इक्कीसवीं सदी में कहानी लेखन के क्षेत्र में सृजनरत युवा पीढ़ी का सामना बीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशक की तीन महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय विसंगतियों के समाज पर पड़ने वाले व्यापक प्रभावों से हुआ. बाबरी मस्जिद के विवादास्पद ढाँचे के ध्वंस के बाद पनपे साम्प्रदायिक तनावों, मंडल कमीशन के बाद उभरे जातिवादी समीकरणों और भूमंडलीकरण तथा उदारीकरण के माध्यम से पश्चिमी देशों के नव साम्राज्यवाद के नये–नये रूपों से इस दशक की कहानी का कथ्य और शिल्प जूझता रहा. 1991 के बाद समाज में साम्प्रदायिकता, जातीयता और उदारीकरण ने एक साथ कदम रखा. देश के बाजारों को आर्थिक उदारीकरण की नीतियों के तहत एकदम से सबके लिए खोल दिया गया. विडम्बना यह थी कि यह बाजार तो प्रतिस्पर्धा पर आधारित था पर नयी आर्थिक नीतियों के माध्यम से सरकार ने असमान लोगों के बीच प्रतिस्पर्धा करवाई थी जिससे समाज में असमानता और भी ज्यादा बढती गई. जिसका परिणाम यह हआ कि अमीर और ज्यादा अमीर और गरीब और ज्यादा गरीब होते गये. इन बाजारवादी नीतियों के बीच पिस कर गरीबी के एक तबके यानि किसानों के पास आत्महत्या के अलावा और कोई विकल्प ही नहीं बचा. यही कारण है कि इन सालों में पनपे असमान आर्थिक विकास के कारण इन दो दशका में बड़े पैमाने पर किसानों ने आत्महत्या की है.

वर्षों पूर्व पहल पत्रिका में अपने एक लेख 'हिन्दी की कहानी समीक्षा : घपलों का इतिहास' में भले ही कहानीकार और लेखक रमेश उपाध्याय ने दशकों में और पीढ़ियों में बांट कर कहानी को देखने की प्रवृत्ति का कितना ही विरोध किया हो पर बीसवीं सदी के अन्त के बाद आने वाली इक्कीसवीं सदी की नयी पीढ़ी की कहानी को संपादकों, आलोचकों, समीक्षकों, पाठकों और कभी–कभी लेखकों ने भी युवा कहानी, जादुई यथार्थवाद की कहानी, भूमंडलीय यथार्थवाद की कहानी, बाजारोन्मुखी कहानी, भूमंडलोत्तर कहानी, उत्तर आधुनिक कहानी के टैग लगाकर आलोचना और समीक्षा के घाट पर उतार

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

दिया. सर्वमान्य रूप में जिस नाम पर सहमति बनी उसे **युवा कहानी** और इसके लेखकों की पीढ़ी को **युवा पीढ़ी** कहा गया.

एक प्रवृत्ति के रूप में पीढ़ियों या दशक में बांटकर कहानी को नहीं देखने के रमेश उपाध्याय के उस पुराने अनुरोध के बाद भी बीसवीं शताब्दी की समाप्ति के साथ ही बाजार में छा जाने की जुगत लिए बैठे संपादकों ने नई सदी में आने वाली कहानी और युवा लेखकों की पीढ़ी को लाने और स्थापित करने के खेल में अपने को उतार दिया. इक्कीसवीं सदी में सर्वप्रथम राजेन्द्र यादव ने अपनी मासिक पत्रिका 'हंस' के फरवरी 2001 अंक को 'नई सदी का पहला बसन्त' नाम से प्रकाशित किया. इस अंक में नीलाक्षी सिंह, जयन्ती और निलय उपाध्याय की कहानियों को स्थान मिला. इसके तीन महीने बाद ही कथादेश पत्रिका का जून 2001 अंक 'ताजा पीढ़ी–बहुलता का वृतान्त' नाम से बाजार में आया. इस अंक के लेखकों में रवि बुले, शशिभूषण द्विवेदी, अल्पना मिश्र, सुभाष कुशवाहा, मुहआ माजी कमल इत्यादि थे. इसके बाद 2002 में इंडिया टुडे ने भी अपनी 'साहित्य वार्षिकी–संभावनाओं के साक्ष्य' में भी नीलाक्षी सिंह, रवि बुले, प्रियदर्शन, अल्पना मिश्र और सुभाषचन्द्र कुशवाहा को स्थान दिया. जुलाई 2004 में इसी सिलसिले को आगे बढ़ाते हुए कथादेश ने ऐसा ही एक और 'नवलेखन अंक' प्रकाशित किया जिसमें अरविन्द शेष और अजय नावरिया को स्थान मिला. सही मायनों में यह पीढ़ी और इसके युवा लेखक रविन्द्र कालिया के संपादन में अक्टूबर 2004 के वागर्थ अंक से इस दशक के साहित्यिक परिदृश्य पर छा गये. इस युवा पीढ़ी के आन्दोलन में वागर्थ के इस अंक ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई. इस अंक में 21 नये कहानीकार पहली बार छपे जिनमें से कई ने आगे आनेवाली कहानी के मुहावरे को बदलने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई ये कहानीकार थे, चंदन पांडेय, विमलेश त्रिपाठी, दीपक श्रीवास्तव, मोहम्मद आरिफ, जितेन्द्र कुमार बिसारिया, कुणाल सिंह, मनोज कुमार पांडेय, मनीषा कुलश्रेष्ठ, अरविन्द शेष, राजेश प्रसाद, विमल चन्द्र पांडेय, टी. श्रीनिवास, राकेश मिश्र, अंशु मालवीय, विपिन कुमार शर्मा, राजेन्द्र कुमार कनौजिया, पंकज सुबीर, नीलम शंकर, तरूण भटनागर, ओमप्रकाश तिवारी और सुरेश शाह.

इसके बाद 2005 में भी वागर्थ का युवा कहानी विशेषांक आया पर बाद में रविन्द्र कालिया ने ही नया ज्ञानोदय के मई जून 2007 युवा पीढ़ी लेखन अंक में वागर्थ के उस अंक के अधिकांश लेखकों की कहानियों को वापिस प्रकाशित करके एक प्रकार से युवा कहानी आंदोलन ही खड़ा कर दिया. इनकी देखादेखी हंस, कथाक्रम, प्रगतिशील वसुधा ने भी समकालीन कहानी विशेषांक के नाम से अंक छापे. द्वैमासिक पत्रिका परिकथा ने भी सितम्बर–अक्टूबर 2008 व नवम्बर दिसम्बर 2008 में नवलेखन अंक, प्रकाशित किये. लमही पत्रिका ने भी सुशील सिद्वार्थ के संपादन में हमारा कहानी समय के नाम से 2012 व 2013 में दो विशेषांक निकाले. इन सभी संपादकों व कहानी पत्रिकाओं के कारण यह कहानी युवा कहानी व इसके लेखक युवा पीढ़ी के लेखक मान लिये गये.

किन्तु सबसे बड़ा सवाल अभी भी वही था कि इस कहानी में युवा क्या है क्योंकि इस काल खंड में हिन्दी कहानी लेखन के क्षेत्र में अनेक प्रवृत्तियाँ और पीढ़ीयाँ एक साथ कार्यरत थी. कथाकर संजीव कह रहे हैं कि उस समय 5 पीढ़ीयाँ एक साथ कथा लेखन के क्षेत्र में कार्यशील थी उसमें कृष्णा सोबती, राजेन्द्र यादव, ज्ञानरंजन, काशीनाथ, असगर वजाहत, उदयप्रकाश, नीलाक्षी सिंह की पीढ़ी को शामिल कर सकते हैं. इसलिए इक्कीसवीं सदी की कहानी के परिदृश्य को देखते हुए हमें इन बातों पर विचार करना होगा कि यह कहानी अपनी पूर्ववर्ती कहानी से किन मायनों में भिन्न है ? इन कहानियों में कथ्य, शिल्प और भाषा के स्तर पर ऐसा क्या है जो अपने समय की पूर्ववर्ती कहानी से या और स्पष्ट

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

शब्दों में कहें तो बीसवीं शताब्दी की हिन्दी कहानी से अलग करता है. कहीं ऐसा तो नहीं कि इक्कीसवीं सदी की यह हिन्दी बीसवीं सदी की हिन्दी कहानी का एक्सटेंशन मात्र हो

हर दौर में आने वाली कथा पीढ़ी एक नयी कथा दृष्टि साथ लेकर आती है. इन कहानियाँ की भिन्नता को रेखांकित करते हुए नीरज खरे[1] लिखतें हैं कि 'यथार्थ को कहानी से देखने का नजरिया ही युवा पीढ़ी की कहानी में बदलाव का मुख्य बिंदु है. इसकी बात पहले भी हुई है. यह कहानियां इसी 'नजरिये' से देखे जाने का आग्रह करती है अब कहानी का यथार्थ बहुत ऊपर–ऊपर नहीं कहानी के भीतर–भीतर उसके 'पाठ' से ध्वनित होता है इसके लिए यथार्थ निरूपण की किसी प्रचलित परिपाटी को छोड़ आज के कहानीकार भाषा और कहन के नए अंदाज को ग्रहण कर रहे हैं. इसके चलते भले ही यह आभासित हो कि नई पीढ़ी यथार्थ से बचकर निकल रही है, पर वह दरअसल उस में शामिल है और उसे अपनी कथा शर्तों यानी कलात्मक कौशल से ही देखना चाहती है और यही नई पीढ़ी के बदलाव का खास बिंदु है'. पर यथार्थ को अलग दृष्टि से देखने का यह बिन्दु आखिरकार माना किस कहानी से जाये. ऐसा तो हुआ नहीं है कि कहानी इक्कीसवी सदी में आते ही अचानक बदल गई हो. कथादृष्टि का यह बदलाव सबसे पहले पंकज मित्र की कहानी 'पड़ताल'[2] से माना जाता है. इस कहानी का कुल सार यह है कि बाजार के माध्यम से घर में जाये नये रंगीन टीवी के प्रवेश के बाद जब पूरा परिवार उसपर अमिताभ बच्चन की फिल्में देख रहा होता है, ऐसे माहौल में वृद्ध किशोरीरमण बाबू परिवार के सदस्यों से उपेक्षित होकर आठवें दिन दम तोड़ देते है. बाजार घरों में प्रवेश करते ही कैसे हमारी संवेदनाओ और प्राथमिकताओं को प्रभावित करता है, उस भाव को दर्शाने का कार्य यह कहानी बखूबी करती है.

इक्कीसवीं सदी में युवा कहानीकारों की एक पूरी पीढ़ी नये तेवर, शिल्प, भावबोध के साथ कथा परिदृश्य पर दस्तक दे रही थी. बीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशक की कहानी विमर्शों के कठघरे में कैद होकर रह गयी थी इसलिए शताब्दी परिवर्तन के साथ ही कहानी अब नई करवट बदलने लगी थी. आलोचक प्रियम अंकित ने इसे रेखांकित करते हुए कहा है कि–'कहानी शिल्प और कथ्य के जैविक सायुज्य में घटित होने वाली समग्र सत्ता है अतः कथ्य और शिल्प को अलग–अलग करके नहीं देखा जा सकता यथार्थ की बहुस्तरीयता के दबाव में पुरानी सीमाएं और परानी प्रतिबद्धताएं ध्वस्त हो चुकी है. यथार्थ का यह नया रूप कथानक में नए विस्तार और अन्विति की मांग करता है. इस विस्तार को उस की जटिलता में समेटने और अभिव्यक्त करने के लिए ही रूपक, फैंटेसी आदि का चलन कहानी में बढ़ा है यह वर्तमान नवलेखन की सीमा नहीं बल्कि शक्ति ह इससे कथानक कथा की सीमा में ही विस्तार प्राप्त कर लेता है'[3].

जादुई यथार्थवाद में उलझी पूर्ववर्ती पीढ़ी से युवा पीढ़ी की इसी भिन्नता को रेखांकित करते हुए नीरज खरे बताते हैं कि– समकालीन युवा कहानीकार फंतासी और यथार्थ के मेल की कथा संभावनाओं को फलित कर रहे हैं. आश्चर्य ही लगता है कि यह पीढ़ी फैंटेसी की कला–युक्तियों का जितना इस्तेमाल करती है उतना जादुई यथार्थवाद वादी शैली का नहीं. वर्तमान युवा पीढ़ी की कहानी के स्वभाव में संभवत यह शैली मेल खा सकती थी. रवि बुले की कहानी 'लापता नत्थू उर्फ दुनिया न माने' इसी तरह जादुई मिलावट करने का प्रयत्न है. फंतासी के जरिए कथा स्थापत्य निर्मित करने की बानगी 'सनातन बाबू का दांपत्य'(कुणाल सिंह), 'परिंदगी है कि नाकामयाब है'(चंदन पांडे) और 'क्वालिटी लाइफ' (शिल्पी) जैसी कहानियां हैं'[4]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

और कहानियों में हुआ यह रचनात्मक विस्फोट कथ्य की अपार संभावनायें लेकर हमारे सामने आया है. जीवन के हर क्षेत्र पर यहाँ कहानीकारों ने अपनी लेखनी चलाई है. साम्प्रदायिकता के दंश को इस दौर की भोली–भाली निर्दोष जनता ने झेला है. 1992 में अयोध्या के बाद से 2002 के गोधरा तक का सफर और साम्प्रदायिक तनाव समाज में हर तरफ फैले दिखाई देते हैं. वंदना राग की 'युटोपिया', नीलाक्षी सिंह की 'परिन्दे का इंतजार सा कुछ', मौहम्मद आरिफ की 'चोर सिपाही', विमलचन्द्र पांडेय की 'सोमनाथ का टाइम टेबुल' और 'उत्तर प्रदेश की खिड़की', मनोज पांडे की 'खाल', राकेश मिश्र की 'शह और मात', अनिल यादव की 'दंगा भेजियो मौला' और नीरजसिंह की 'सवाल' जैसी कहानियाँ साम्प्रदायिक शक्तियों के षडयंत्रों को उजागर करने का कार्य बखूबी से करती है.

इस पीढ़ी के सामने बाजारवाद से उभरी हुई चुनौतियाँ थी. अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए आम आदमी को बाजार में टिके रहना होता है. बाजार भारतीय समाज की 'संतोषी सदा सुखी वाली' जीवन शैली में अचानक और अकेला नहीं घुसा था. बाजार के साथ एक पूरी पाश्चात्य जीवन शैली, संस्कृति, भारतीय सामाजिक जीवन में घुस आई थी. बाजार की तो मूलभूत प्रवृत्ति ही व्यक्ति को उपभोक्ता में बदलने की होती है. बाजार में बने रहने और अपनी पहचान को बचाये रखने के संकट से इस दौर की सारी आबादी त्रस्त थी. बाजारवाद के प्रभाव और उनसे उभरी विसंगतियों और अन्तर्विरोधों को यह कहानियाँ अपने कथ्य में स्थान दती है. नीलाक्षी सिंह की 'टेक ब ते टेक ना ते गो'(प्रतियोगी) कहानी व्यक्ति के बाजार में टिके रहने के प्रयासों को उद्घाटित करती है. तेजेन्द्र शर्मा की 'कब्र का मुनाफा', पंकज मित्र की पड़ताल', कैलाश बनवासी की बाजार में रामधन', के साथ ही कुणालसिंह की 'इति गोगेश पाल वृतान्त' उपभोक्ता संस्कृति पर व्यंग्य करती है.

इस दौर की कहानियाँ स्त्री विमर्श के कठघरे से बाहर रहकर भी स्त्री मुक्ति की चेतना और चाहत को कहानियों में यथोचित स्थान देती है. कविता की 'उलटबाँसी', अल्पना मिश्र की 'मुक्तिप्रसंग', वंदना राग की 'शहादत और अतिक्रमण', प्रत्यक्षा की 'फुलवारिया मिसराइन', मनीषा कुलश्रेष्ठ की 'कठपुतलियाँ', शिल्पी की 'पापा तुम्हारे भाई', दीपक श्रीवास्तव की 'सत्ताइस साल की सांवली लड़की', जैसी कहानियाँ स्त्रियों की दैहिक और जैविक स्वाधीनता की आवश्यकता और उसे हासिल करने के लिए किये जा रहे प्रयत्नों को उद्घाटित करती है.

यह युवा पीढ़ी की कहानी है तो ऐसा हो ही नहीं सकता कि इनकी कहानियों में प्रेम को लेकर कहानियाँ नहीं लिखी गई हो. बल्कि ज्यादातर कहानियाँ का कथ्य ही प्रेम ही है. याद रखने लायक प्रेम कहानियों में कुणाल सिंह की 'रोमियो, जूलियट और अंधेरा', प्रत्यक्षा की 'दिलनवाज तुम बहुत अच्छी हो', मुहआ माजी की 'चन्द्रबिन्दु', राकेश मिश्र की 'बाकी धुंआ रहने दिया' नीलाक्षी सिंह की 'परिन्दे का इन्तजार सा कुछ' को उल्लेखित किया जा सकता है.

सामान्यतया इस दौर की कहानियों पर आरोप लगता रहा है कि इसम किसानों और मजदूरों पर ज्यादा नहीं लिखा गया है फिर भी कुछ कहानियाँ हैं जो इक्कीसवीं सदी के प्रारम्भ में समाज के आर्थिक रूप से विपन्न तबके यानि किसानों और मजदूरों की पीड़ाओं और संघर्षों को उजागर करती हैं. इनमें तरूण भटनागर की 'गुलमेंहदी की झाड़ियाँ' और 'गुणाभाग', दीपक श्रीवास्तव की 'लघुत्तम समापवर्त्त के',गीत चतुर्वेदी की '100 किलो का साँप', पंकजमित्र की 'बिलौती महतो की उधार फिकिर', बसन्त त्रिपाठी की 'फंदा', चन्द्रकिशोंर जायसवाल की 'समाधान' और पुन्नी सिंह की 'मुक्ति' को अपने कथ्य और शिल्प को वजह से रेखांकित किया जा सकता है.

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

दलित विमर्श के तहत बीसवीं सदी के अन्तिम दशक में लेखकों को इस कठघरे में बांध दिया गया था कि दलित ही दलित विषय कहानियाँ लिख सकता है. इस कठघरे से बाहर निकलकर मौ. आरिफ ने अपनी कहानी 'लू' में बताया कि कैसे सवर्णों द्वारा दलितों से की जाने वाली घृणा में इक्कीसवीं सदी में भी लेश मात्र कमी नहीं आई है.

हर पीढ़ी अपना एक नया शिल्प और भाषा लेकर साहित्य के क्षेत्र में पदार्पण करती है. यह नयी भाषा, शिल्प और कथ्य ही उसके लेखन को पूर्व की पीढ़ी से भी अलग करता है. लेकिन ऐसा लगता है कि इस कालखंड की कहानियाँ कथ्य के स्तर पर ज्यादा सजग नहीं है. संज्ञा उपाध्याय लिखती है कि–ये कहानियाँ यथार्थ के गंभीर विश्लेषण में नहीं जाती. अधिकतर कहानियों में जीवन के मूल प्रश्नों से टकराने की बजाए भाषा और शिल्प के प्रति अधिक आग्रह दिखाई देता है.'[5] लेकिन वह जीवन के मूल प्रश्न कौनसे हैं जिनसे इस पीढ़ी को टकराने का आग्रह किया जा रहा है. यह बाजारवाद और उपभोक्तावाद के दौर की पीढ़ी है इसके जीवन के मूल प्रश्न ही अलग हैं जिन्हें यह अपनी कहानियों के कथ्य में शामिल करते हैं. राकेश कुमार सिंह तो साफ कहते हैं कि 'इस दौर की युवा कहानी मुख्यतः प्रेम, देह, बेरोजगारी और बाजार के चौखटे से जुड़ी कहानी है'[6]

दिनेश कुमार ने 'समकालीन कहानी : कितना जोर कितना शोर'[7] आलेख में कथाकार काशीनाथ के हवाले से यह बात कही थी कि 'ये युवा लेखक विज्ञापन की ऐसी विधियाँ जानते हैं जिनसे पुराने लेखक अपरिचित थे. ये लोग लेखन पर कम ध्यान देकर विज्ञापन की आधुनिक सुविधाओं का लाभ अधिक उठा रहे हैं.' लेकिन कोई भी लेखन विज्ञापन के बलबूते पर समाज और साहित्य में इतनी मजबूती से नहीं टिक सकता जितनी मजबूती से इस युवा पीढ़ी का लेखन टिका हुआ है. इन कहानियों में कुछ तो है जो यह साहित्यिक परिदृश्य में हिन्दी कहानी को केन्द्र में ले आया है. युवा लेखकों के इसी नयेपन को रेखांकित करते हुए नमिता सिंह कहती है कि 'युवा लेखकों की सामाजिक विश्लेषण की अपनी एक अलग दृष्टि है. उनका सोचने का तरीका अलग है. लेकिन वे अपने समय के साथ पूरे उद्वेग के साथ मुठभेड़ कर रहे है, जूझ रहे हैं, दीगर बात यह है कि उनका कथ्य, शिल्प, शैली या कहानी के ट्रीटमेंट में नयापन हो सकता है लेकिन वे अपने सवालों के साथ बेहतर अभिव्यक्ति की एक सार्थक कोशिश में जुटे है'[8]

जहाँ तक कहानीकारों की बात है तो इस काल खंड में वंदना राग, मनीषा कुलश्रेष्ठ, अल्पना मिश्र, संजय कुंदन, पंकज मित्र, नीलाक्षी सिंह, रवि बुले, उमाशंकर विद्यार्थी, शरद सिंह, प्रत्यक्षा, जयन्ती रंगनाथन, प्रभात रंजन, कैलाश वनवासी, कविता, शशिभूषण द्विवेदी, अजय नावरिया, राकेश मिश्र, हुस्न तबस्सुम निहाँ, गीता श्री, जयश्री राय, सोनाली सिंह, ज्योति चावला, आकांक्षा पारे काशिव, अनुज, विमल चन्द्र पांडे, विवेक मिश्र, टी श्रीनिवास, राजेश प्रसाद, जितेन्द्र कुमार बिसारिया, मोहम्मद आरिफ, कुणाल सिंह, चन्दन पांडेय, दीपक श्रीवास्तव, शिल्पी, मनोज कुमार पांडेय, गीत चतुर्वेदी, अनिल यादव, शर्मिला बोहरा जालान, प्रत्यक्षा, विमलेश त्रिपाठी, अरविन्द शेष, पंकज सुबीर, नीलम शंकर, तरूण भटनागर, ओम प्रकाश तिवारी, सुरेश शॉ, शिवशंकर मिश्र, रामकुमार सिंह, मिथिलेश प्रियदर्शी, रवीन्द्र आरोही, अनुराग शुक्ला, सत्यकेतु, कुमार अम्बुज, देवीप्रसाद मिश्र, स्नोवा बार्नो, गौरव पांडे, सुमन केशरी, सुंदर चन्द्र ठाकुर, कृष्ण कांत, अपर्णा मनोज, किरण सिंह, नीला प्रसाद, प्रेम भारद्वाज, शरद सिंह, विवेक मिश्र, शेखर मल्लिक, प्रदीप जिलवाने, अजय शर्मा, इन्दिरा डांगी, मंजुलिका पांडेय, सलिल सुधाकर, अनामिका, वर्तिका नन्दा, सुभाष चन्द्र कुशवाहा, कैलाश वानखेडे, पंखुडी सिन्हा, पराग मांदले, प्रिय दर्शन, वंदना शुक्ल, श्रीकान्त दुबे, ज्योति कुमारो, प्रभा इला, विभा रानी, सुमन सारस्वत, अलका सिन्हा, रजनी गुप्त,

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

मधु अरोडा, प्रज्ञा पांडेय, अरविन्द कुमार सिंह, आशुतोष, दुर्गेश सिंह, रामजी यादव, अरूण कुमार असफल, आनन्दवर्धन, प्रमोद कुमार बर्णवाल, हनीफ मदार, आशीष दशोत्तर, अनिल यादव, रणीराम गढवाली, अजम मेहताब, जयप्रकाश कर्दम, अनिता भारती, श्योराज सिंह बैचेन, शीलबोध, चरणसिंह पथिक, रतन कुमार सांभरिया, सत्यनाराण पटेल, विजय गौड, रमेश यादव, मजकूर आलम के नाम को उल्लेखित किया जा सकता है.

और जिन कहानियों से इस सदी की कहानी को भलीभांति पहचाना जा सकता है उनमें अल्पना मिश्र की 'मुक्ति प्रसंग' मिड डे मील' और 'महबूब जमाना और जमाने में वे', मनीषा कुलश्रेष्ठ की 'कठपुतलियाँ' और 'स्वाँग', चंदन पांडे की 'परिंदगी है कि नाकामयाब है' 'भूलना' 'सिटी पब्लिक स्कूल वाराणसी', कुणाल सिंह की 'शोकगीत' 'सनातन बाबू का दापत्य' 'रोमियो जूलियट और अंधेरा', गीत चतुर्वेदी की 'सावंत आंटी की लड़कियां' 'पिंक स्लिप डैडी', कविता की 'उलट बांसी', अखिलेश की 'अंधेरा', नीलाक्षी सिंह की 'परिंदे का इंतजार सा कुछ' 'प्रतियोगी' और 'एक था बुझवन', वंदना राज की 'यूटोपिया' हनीफ मदार की 'फराग मास्टर की मौत', मोहम्मद आरिफ की 'मियां' 'फूलों का बाड़ा', 'लू' और 'तार', शिल्पी कि 'पापा तुम्हारे भाई' रवि बुले की 'लापता नत्थू उर्फ दुनिया में माने', आकांक्षा पारे काशिव की 'शिफ्ट कंट्रोल आल डिलीट', अनिल यादव की 'लोक कवि का बिरहा' बौर 'नगरवधएं अखबार नहीं पढ़ती', पंकज सुबीर की 'अंधेरे में गणित' और 'ईस्ट इंडिया कंपनी' जय श्रीराय कि 'पिंडदान' 'सूरज का छौना' और 'खारापानी', विवेक मिश्र की 'हनियां' और 'काली पहाड़ी', विमल चंद्र पांडेय की 'काली कविता के कारनामे', संजय कुंदन की 'श्यामलाल का अकेलापन' और 'केएनटी की कार', गीताश्री की 'गोरिल्ला प्यार' और 'सोन मछरी', प्रत्यक्षा की 'फुलपूर की फुलवारिया मिसराइन' और 'जंगल का जादू तिल तिल', शशिभूषण द्विवेदी की 'ब्रह्महत्या', राकेश मिश्र की 'तक्षशिला में आग', विमल चन्द्र पांडेय की 'मस्तूलों के इर्दगिर्द' 'पवित्र सिर्फ एक शब्द है' और 'डर' और उत्तरप्रदेश की खिड़की', अजय नावरिया की 'निर्वासन' और 'यस सर', कैलाश वानखेडे की 'सत्यापित', सत्यनारायण पटेल की 'लूगड़ी का सपना', अरूण असफल की 'पाँच का सिक्का', मनोज कुमार पांडेय की 'पानी', उमाशंकर चौधरी की ''अयोध्या बाबू सनक गये हैं', राकेश बिहारी की 'वह सपने बेचता था', प्रभात रंजन की 'बोलेरो क्लास' को रखा जा सकता है

निष्कर्ष

बीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशक के कहानीकारों ने कहानी के शिल्प और कथ्य में विभिन्न प्रयोग किये. समाज में व्याप्त साम्प्रदायिकता, जातीयता और उदारीकरण ने इन कथाकारों के कथ्य को समृद्व करने का कार्य किया. इन कहानियों के शिल्प में नयापन है, कथ्य में विविधता है और समकालीन परिवेश को भी यह कहानियाँ प्रकट करने का कार्य करती हैसंक्षेप में यह कहा जा सकता है कि इक्कीसवीं सदी के भारतीय समाज में व्याप्त सभी विसंगतियों, अवमूल्यनो, नैतिक स्खलनों, अन्तर्विरोधों और विमर्शों को यह कहानीकार अपनी कहानियों के माध्यम से उजागर करते है.

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सन्दर्भ

[1]नीरज खरे,15 जून 2013, समकालीन युवा कहानी–'स्मृतियों के भाष्य और यथार्थ का सवाल'
[2]इंडिया टुडे , साहित्य वार्षिकी–1997, शब्द रहेंगे साक्षी, पंकज मित्र
[3]युवा पीढ़ी विशेषांक, नया ज्ञानोदय, मई 2007, पृष्ठ संख्या–126,प्रियम अंकित,'बेचैन जल में डगमगाते चांद का यथार्थ'
[4]नीरज खरे,15 जून 2013, समकालीन युवा कहानी–'स्मृतियों के भाष्य और यथार्थ का सवाल'
[5]परिकथा, नवम्बर–दिसम्बर, 2010, पृष्ठ संख्या–15
[6]परिकथा, नवम्बर–दिसम्बर, 2010, पृष्ठ संख्या–13
[7]तहलका, 30 जून 2010, साहित्य विशेषांक, पृष्ठ संख्या–07
[8]परिकथा, सितम्बर– अक्टूबर 2010, पृष्ठ संख्या–18